खुतबात ए फकीर /१

उर्दु जिल्द १ / ४ से इन मज़मुनो का लिप्यांतरण किया गया है.

पीर ज़ुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

१. निकाह का मतलब

निकाह आधा ईमान है: एक कुवारा आदमी चाहे कितना ही नेक क्यो ना हो जाये वो ईमान के कामिल रूतबे को नही पोहाच सकता जब तक वो शादी शुदा ज़िन्दगी मे दाखिल होकर ज़ीम्मेदारियो और हुकूक को अदा ना करे, तब तक उसका ईमान कामिल नही होता, इसलिये जिस लडके या लडकी की शादी ना हो और वो जवान उम्र हो तो हदीस मे उसको मिस्किन कहा गया है. गोया ये लोग रहम के काबिल है की उम्र के इस हिस्से मे ये शादी शुदा ज़िन्दगी गुज़ारने से मेहरूम है.
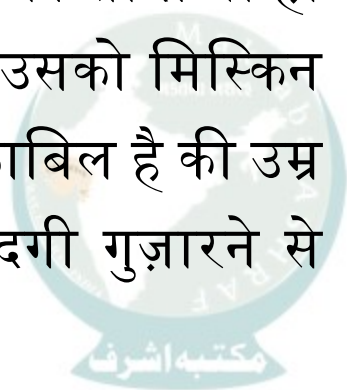
निकाह की अहमियत: ये सौ फिसद पक्की बात है की जहा निकाह नही होगा वहा ज़ीना होगा इसलिये शरियत ने निकाह की अहमियत को वाज़ेह किया है.
आज जिस समाज़ मे लोग निकाह से भागते है यानी निकाह करने से बचते है, आप देखिये की वहा सैक्स की ज़रूरत के लिये अडडे खुले होते है.
शरियत शरीफा ने इस बात को नापसन्द किया है की इन्सान गुनाहो भारी ज़िन्दगी गुज़ारे. इसलिये कहा गया की तुम निकाह करो ताकी तुम्हे अपने आप को पाकबाज़ रखना आसान हो जाये.
अगर निकाह का हुक्म ना दिया जाता तो मर्द औरत को सिर्फ एक खिलौना समझ लेता, औरत अपने लिये कोई मुकाम ना रखती उसकी ज़ीम्मेदारी उठाने वाला कोई ना होता.
शरियत ने कहा की अगर तुम चाहते हो की इकठठे रहो तो तुम्हे उसकी ज़ीम्मेदारियो का बोझ भी उठाना पडेगा.

२. महर का हक और उसकी एहमियत

निकाह एक एग्रीमेंट है जो मियां बीवी मे तय पाता है, इस एग्रीमेंट मे अगर कोई औरत अपनी तरफ से

शर्त रखनी चाहे तो शरिअत ने इस्की गुन्जाइश दी है, मिसाल के तौर पर वो कहे की मुझे अच्छे माकन की ज़रूरत है, मुझे महीने के इतने खर्चे की ज़रूरत, वो कहे की मे निकाह तब करूंगी अगर तलाक का हक मुझे दिया जाये, शरिअत ने इस्की इजाजत दी है की वो निकाह से पहले अपनी शर्ते मनवा सकती है लेकिन जब निकाह हो गया और तलाक का हक मर्द के पास है या मर्द अपनी मरज़ी से खर्चा देगा तो अल्लाह की बन्दी अब रोने से क्या फायदा.

शरीअत ने निकाह को एक एग्रीमेंट कहा है, जबकी हमे उसकी एहमियत का पता नही होता, आजकल लडकी वाले अपनी सादगी मे मारे जाते है, महर के हक के लिखने का वकत आया तो किसी ने कहा ५००० रूपया किसी ने कहा ५०० काफी है, अल्लाह के बन्दो ५०००, ५०० रूपये काफी नही क्यु की ये बच्ची की ज़िन्दगी का मामला है, इसे एब ना समझो अगर तुम समझते हो कोई बात निकाह से पहले तय कर लेना बेहतर है तो शरीअत ने तुम्हे उसकी इज़ाज़त दी है, लडके वालो की तो यही चाहत होती है की लडकी वाले महर का हक ना ही लिख-वाये तो बेहतर है, क्यु? इसलिये की ज़ीम्मेदारी जो होती है.

महर के हक के बारे मे तीन सुन्नते है:

१-**महरे फातमी:** यानी हज़रत फातिमा(रदी) का हक्के महर या फिर हज़रत आयेशा(रदी) को जो हक्के महर नबी ﷺ ने अदा फरमाया था, उसको बांध लिया जाये तो यह भी सुन्नत है, मुफ्ती अब्दुर रहीम लाजपुरी (रह) लिखते है पसंदीदा और एहतियात ये है कि महर-ए-फातिमी की गिनती १५० टोला या १७४९,९ ग्राम चांदी पर अदायगी की जाये, (फतावा रहिमिया ८/२३१,२३२) महरे फतीमी चांदी के भाव के एतेबार से उपर नीचे होता है, इस वकत आज का जो भाव है यानी ता: ३० मार्च २०१९, तकरीबन ६०,००० के करीब महरे फतीमी बनती है रूपियो मे.

२-**महर मिसल:** लडकी के करीबी रिश्तेदारो मे आमतौर पर लडकियो का जो महर रखा जाता है, उसको कहा जाता उन्के बराबर उसको महर बांधना ये भी सुन्नत है, मसलन इससे पहले जिस लडके की शादी हुवी तो उसको हमने ८०००/- दिया था, और इससे पहले जो शादी हुवी मसलन चाची का महर इतना था, फूफी का इतना था, ये महरे मिसल है अगर ये भी कोई देता है तो ये भी सुन्नत है.

३-लडकी की दानीश्बन्दी यानी उसकी जहानत, नेकी,

परहेज़गारी और उसकी शराफत सलाहियत को सामने रखते हुवे उस्का महर बांधा जाये, ये भी सुन्नत है, इसमे महर देने वालो को इख्तियार है के लडकी की शराफत, परहेज़गारी और सलाहियत को सामने रखकर वो अपने एतेबर से जितना देना चाहे १००००, २००००, ५००००, १लाख जो भी चाहे देदे वो उस्के उपर है.

ये तीन किस्म के महर जो हुज़ूर صلى الله عليه وسلم से सुन्नत है, निकाह करने वालो को जिस पर सहुलत हो वो अदा करना चाहिये और सुन्नत की अदायगी का खास खयाल रखना चाहिये, और शरीअत ने ये तीन तरीके बताये है इनमे से किसी एक को पसन्द कर ले, उसे सुन्नत का सवाब मिलेगा, इन्शा अल्लाह.

निकाह के वकत महर का हक मुकर्रर करते हुवे कहते है की महर मुअज़्ज़िल होगा या मोअज़्ज़ल होगा, मुअज़्ज़िल का मतलब है जल्दी अदा करना मियां बीवी के मिलन होने से पहले महर मुअज़्ज़िल अदा करना ज़रूरी है, शोहर अदा नही करेगा तो गुनाहगार होगा. महर की दूसरी किस्म मोअज़्ज़ल है इस्का मतलब है जब बीवी उसको तलब करे वो खाविन्द से ले सकती है, खाविन्द की शान के मुनासिब नही की वो महर

माफ करवाने के लिये बीवी पर दबाव डाले, हा अगर बीवी महर की रकम वापस लोटा दे तो कुरान के हिसाब से इस रकम मे बरकत होती है.

३. ज़बान से कलिमा पढना

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहा इसकी इतनी अहमियत है कि एक काफिर आदमी पूरी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ार बैठा, जिस्म के बाल सफेद हो गये अगर वह दिल से कलिमा पढ लेता है तो उसकी भी मगफिरत फरमा देते है.

रिवायत में आता है कि जब कोई बंदा दिल से कलिमा पढता है तो एक फरिश्ता इस अमल को लेकर आसमानों की तरफ जाता है. अभी रास्ते में होता है कि उपर से नीचे आने वाले फरिश्ता से उसकी मुलाकात हो जाती है.

अब उपर से नीचे आने वाला फरिश्ता पूछता है कि कहां जा रहे हो? नीचे से जाने वाला फरिश्ता कहता है कि एक आदमी ने कलिमा पढा है, मे इस अमल को अल्लाह की हुज़ूर में पेश करने जा रहा हुं. फिर यह उपर से आने वाले फरिश्ते से पूछता है कि आप कहां जा रहे है? वह कहता है कि जिस आदमी ने कलिमा पढा है मे उसके

लिये मगफिरत का पैगाम लेकर जा रहा हुं.
अब सोचिये जुबान से चंद बोल निकले, उसकी ज़िन्दगी के सब गुनाहों को माफ कर दिया.
दुनिया की अदालत का मामला देखा- किसी आदमी पर नाज़ायाज़ मुकद्दमा हो जाये, अदालत में पता भी चल जाये कि यह मुकद्दमा ज़ूठा है तो उस आदमी को इज्ज़त के साथ बरी कर दिया जाता है मगर अपने रिकार्ड में उस मुकद्दमे को दर्ज़ ज़रूर कर लिया जाता है. दुनिया की अदालत इज्ज़त से बरी भी कर दे मगर अपने पास मुकद्दमा दर्ज़ रखती है.
मगर अल्लाह तआला का मामला अज़ीब देखा, जिस बंदे ने वाकई गुनाह किये थे, वह गुनाह जो पहाडों से भी ज़्यादा वजनी थे अगर वह आदमी सच्ची तौबा कर लेता है तो यही नहीं कि उन गुनाहों को माफ कर दिया जाता है बल्कि अल्लाह तआला उन गुनाहों का रिकार्ड भी आमालनामे से खत्म करवा देते है.
हदीस पाक में आता है कि जिन फरिश्तों ने उस आदमी के गुनाहों को लिखा था अल्लाह तआला उन फरिश्तों की याददाश्त से भी गुनाहों को खत्म फरमा देते है ताकि कयामत के दिन गवाही न दे सकें. सुब्हानअल्लाह.

ज़बान से निकले हुवे कुछ बोलों ने क्या कुछ बदलवा दिया.

४. ज़िन्दगी गुज़ारने के दो रास्ते

एक अपने तज़रूबे और अपनी देखी हुवी चीझो के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारना, और दूसरा अपने खालिक के हुक्मो का मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारना.

जिस तरह इन्सान देखना, बोलना, सुनना, सूंघना और छूना के इल्म से कमज़ोर है इसी तरह इसके तज़रूबे भी बहोत कमज़ोर है, अपने तज़रूबे को बुनियाद बनाने के बजाये अल्लाह के हुक्मो को बुन्याद बनायेगा तो इन्सान यकीनन कामयाब होगा.

एक इन्जीनियर किसी मशीन को बनाता है तो वो अच्छी तरह जानता है के मशीन किस तरह काम करेगी, जब मशीन कही भेजता है तो मशीन के साथ एक इन्जीनियर और मेन्युअल भी भेजते है, अगर इस मिसाल को जहेन मे रखे तो ज़िन्दगी की हकीकत को समझना आसान हो जाता है.

अल्लाह ने इन्सान को मशीन बनाया और नबियो को भेजा और सब से आखिर मे हुज़ूर صلى الله عليه وسلم तशरीफ लाये, आप صلى الله عليه وسلم तमाम इन्सानो के इन्जीनियर बनकर आये

और आप पर कुरान यानि इन्सानो की ज़िन्दगी के लिये हिदायत की किताब नाज़ील हुवी.
आपﷺ उस्के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारी और सहाबा(रदी) से कहा ए लोगो जिस तरह मे ज़िन्दगी गुज़ार रहा हु अगर तुम इस तरह ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जावोगे और फरमाया के मे अपने पीछे ये हिदायत की किताब कुरान छोड कर जा रहा हु, तुम इस के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जावोगे.
अब अपने तज़रूबे और अपनी देखी हुवी चीझो के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारनी है या अपने खालिक के हुक्मो का मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारनी है? फैसला आप का.

५. ज़ीकरे इलाही से गफलत का नतीजा

हमारी अपनी गफलतो की वजह से अल्लाह रीज़्क को तंग कर देते है, जिसने मेरी याद से, मेरे कुरान से मुंह मोडा हम उसकी रोज़ी को तंग कर देते है ये तो दुनिया मे नकद अज़ाब मिला के रोज़ी तंग कर दी.
और कयामत के दिन हम इसको अंधा खडा करेगे, ये दुनिया मे हमारे हुक्मो से अन्धा बना रहा, इसलीये

हम इसको कयामत के दिन अन्धा करके खडा करेगे.
हमारी परेशानिया हमारे अपने हाथो की कमाई है, किसी की माली, किसी को औलाद की परेशानी है, माल है तो और मिल जाये, हकीकत ये है के ये हमारे गुनाहों का वबाल है अगर हम गुनाह करना छोड दे अल्लाह हमे अपने गेब के खज़ानो से खिलाना शुरू कर दे.
ऐक साहब ने अपने घर मे दो साल से सजावात के तौर पर एक खुबसूरत पथ्थर रखा था एक दिन वो उस पथ्थर को उठा कर देखने लगे, के अचानक पथ्थर उस्के हाथ से गिरकर टूट गया और दो टुकडे हो गये, उन्होने देखा के पथ्थर के बिच मे एक खाली जगह है और उस्मे ऐक कीडा है, जब पथ्थर टुटा तो कीडे ने चलना शुरू कर दिया, अब बताये के इस बंद पथ्थर मे कीडे को किस परवरदिगार ने रीज़्क अता फरमाया.
अल्लाह तो हमे रीज़्क अता फरमाते है मगर हम उसको गलत तरीके से इस्तेमाल करते है जिस्की वजह से रीज़्क से बरकत निकल जाती है.
हम जितना कमाते है ज़रूरते उस्से ज़्यादा बढती चली जाती है, यहा तक के करोडो का मालिक होकर भी रोता फिरता है के मे करज़ो मे डूबा हुवा है. [जिल्द/४]

६. औलिया कहा से खाते है?

अल्लाह अपने वलियो को वहा से खिलाते है जहा से वो अपने नबियो को खिलाते है क्या अम्बिया(अल) इस दुनिया मे नौकरिया करते थे? वो तो दीन का काम करते थे और अल्लाह उस दीन के काम के सदके मे उन्को दुनिया की नेमते अता फरमाया करते थे, हम भी अगर दीन का कम करेंगे तो दुनिया हमारे कदमो के निचे होगी.

अच्छा आलिम वो होता है जिसके दिल मे बेनियाज़ी हो, उल्मा और तलबा से गुज़ारिश है के अल्लाह के खज़ानो पर नजर रखे, किसी की जेब पर नजर रखने की ज़रूरत नही, इल्म की कदर कर लिज्ये, फिर देखिये के केसी इज्ज़ते मिलती है अल्लाह ही हर बन्दे को रीज़्क देते है, और उस्मे बरकत भी वही देते है.

हज़रत मूसा(अल) के जमाने एक गरीब आदमी रोटी रोटी को तरसता था, वो उन्के पास हाज़ीर होकर कहने लगा अल्लाह के नबी आप तूर पहाड पर अल्लाह से बातचीत्त करते है, जरा मेरी भी फरयाद पोहचा दिज्ये के मेरी ज़िन्दगी के जितने दिन बाकी है उन्का रीज़्क एक ही वकत मे मुझे दे दिज्ये के कुछ दिन तो पेट भर कर खाना खालुन्गा, हज़रत मूसा(अल) ने

उसकी फरयाद पोहचा दी, उसको पूरी ज़िन्दगी का रीज़्क मिल गया.

कुछ साल गुजरने के बाद हज़रत मूसा(अल) को उस शख्स का ख्याल आया के पता नही ज़ीन्दा है या नही, जाकर देखा के उस जगह पर महल बना हुवा है, और दस्तर खान लगा हुवा है और मख्लुके खुदा खा रही है, और वो बडे ठाठ की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है.

बडे हेरान हुवे के या अल्लाह इस आदमी को सारी ज़िन्दगी का रीज़्क मिला था वो तो थोडा सा था और अब तो इसके वारे नियारे हो चुके है, अल्लाह ने फरमाया ए मेरे नबी इसको रीज़्क तो वही था जो हमने उसे दिया था इसने उस्से बडे नफे की तिज़ारत की इसने फकीरों और मिस्कीनो को खिलाना शुरू कर दिया, और जो मेरे रास्ते मे खर्च करता है उसको मे कम से कम दस गुना वापस लोटा देता हु इसको इस तिज़ारत से इतना नफा हुवा के आज वो मालदार है.

[जिल्द/४]